वज्हे तख़्लीक़े दो आलम मुरसले आज़म (स.)

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी

''ऐ रसूल (स.) अगर आप न होते तो काएनात में कुछ न होता''।

इसका मतलब यह है कि काएनात में जो पैदा हुआ है वह हमारे रसूल (स.) के तुफ़ैल में पैदा हुआ है। यूँ अर्ज़ करूँ कि यह आसमान का जो शामियाना है वह चूँकि हमारे रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे इसलिए लगाया गया गया यह ज़मीन का फर्श है वह इसलिए बिछाया गया क्योंकि रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे यह चाँद व सूरज व सितारों के ज़रिये से जो रौशनी की गई वह इसलिए की गई क्योंकि रसूल (स.) तशरीफ लाने वाले थे चूँकि एक अज़ीम मेहमान एक इज़्ज़तदार मेहमान आने वाला था इसलिए कुदरत ने यह एहतेमाम किया कि आसमान का शामियाना लगाया ज़मीन का फर्श बिछाया चाँद सूरज व सितारों से रौशनी का इन्तिज़ाम किया जब तमाम इन्तिज़ामात हो चुके तब रसूल (स.) ज़मीन पर तशरीफ लाए तो मालूम हुआ कि आसमान का शामियाना रसूल (स.) की वजह से यह ज़मीन का फर्श रसूल (स.) की वजह से यह चाँद सूरज व सितारों की पैदाइश रसूल (स.) की वजह से क्योंकि वह ज़मीन पर तशरीफ लाने वाले थे इसलिए इन तमाम चीज़ों का एहतेमाम किया गया तो अब मैं पूछना चाहता हूँ कि जब कोई मुअज़्ज़ज़ मेहमान आता है कोई मुकर्रम मेहमान आता है उसके लिए हम एहतेमाम करते हैं शामियाना लगता है फर्श का इन्तिज़ाम होता है रौशनी का इन्तिज़ाम होता है कब तक? जब तक वह मेहमान मौजूद रहता है फर्श का इन्तिज़ाम रहता है शामियाने का इन्तिज़ाम रहता है रौशनी का इन्तिज़ाम रहता है क्योंकि इसकी वजह से यह इन्तिज़ाम किया गया है लेकिन इधर वह मेहमान गया उधर फर्श समेट लिया जाता है शामियाना उतार लिया जाता है लाइटें बुझा दी जाती हैं तो मैं पूछना चाहता हूँ कि यह ज़मीन का फर्श इसलिए बिछा कि रसूल (स.) आने वाला था यह आसमान का शामियाना इसलिए कि रसूल (स.) तशरीफ़ लाने वाले थे या चाँद सूरज की रौशनियाँ इसलिए कि रसूल तशरीफ लाने वाले थे तो होना तो यह चाहिए था कि जब रसूल (स.) तशरीफ ले गये तो ज़मीन का फर्श समेट लेता आसमान का शामियाना उतर जाना चाहिए था चाँद व सूरज की लालटैनें बुझ जानी चाहिए थीं यह तमाम चीज़ें अपनी जगह इसी तरह बाक़ी रहना इस बात का सुबूत है कि कोई हो न हो मुहम्मद (स.) जैसा आज भी मौजूद है।

कोई बिलकुल रसूल (स.) जैसा आज भी मौजूद है जिसके तुफैल में यह ज़मीन भी क़ायम है यह आसमान भी क़ायम है यह चाँद सूरज भी क़ायम हैं।

इस से पहली उम्मतों पर आप तारीख़ उठाकर देखें पता नहीं कितनी उम्मतें हैं जिन पर अज़ाब नाज़िल हुआ फना हो गयीं ख़त्म हो गयीं अज़ाब नाज़िल हुआ अल्लाह की तरफ से कभी ज़मीन का तख़्ता पलट गया और पूरी उम्मत फना हुई। कभी कोई अज़ाब नाज़िल हुआ। कभी बीमारियों के ज़रिये से कभी वबाओं के ज़रिये से और वह उम्मत मिट गई लेकिन आप याद रखें कि वैसा अज़ाब कभी मुसलमानों पर नाज़िल नहीं होगा जो इससे पहले उम्मतों पर नाज़िल हुआ। नहीं होगा क्यों? क्योंकि कुर्आन का एलान है किसी भी

मुसलमान से पूछिये आप क्या जो पिछली उम्मतों पर अज़ाब नाज़िल हुए वह मुसलमानों पर भी नाज़िल हो सकते हैं हालांकि उनसे ज़्यादा गुनाहगार उनसे ज़्यादा बदकार जितने आज मुसलमान गुनाह कर रहे हैं अगर अज़ाब नाज़िल होने वाला होता तो सौ बार हो चुका होता इतनी गुनाहगार उम्मत है इतने बदकार हैं फिर भी मुसलमान मुतमइन है कि हम पर ऐसा अज़ाब नाज़िल नहीं होगा कि जैसा इससे पहले की उम्मतों पर हो चुका, क्या नाज़िल नहीं होगा मुसलमान पुकार कर कहेगा कि इस लिए नाज़िल नहीं होगा कि अल्लाह कुर्आन में वादा कर चुका है कि ऐ रसूल (स०) मुसलमानों से कह दीजिये कि हम उन पर वह अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे जो इनसे पहले वाली उम्मतों पर हमने अज़ाब नाज़िल किये थे और पूरी–पूरी उम्मतें तबाह हो गईं थीं मिट गयीं थीं क्यों? इसलिए आपका वजूद दरमियान में है। पूरी तवज्जो चाहता हूँ क्योंकि आपका वजूद। यह वादा इलाही है एलान कर दीजिये यह इतमिनान दिला दीजिये कि हम उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे जैसा पिछली उम्मतों पर नाज़िल हुआ क्योंकि आपका वजूद उनमें है आपकी ज़ात बा बरकत मौजूद है इसलिए आपके वजूद की बरकत की वजह से हम उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे तो मैं पूछता हूँ मुसलमानों ये तो रसूल (स०) ज़िन्दगानी का वाक़ेआ है यह एलान हो रहा है आज तुम मुतमइन हो क्योंकि कुर्आनी आयत यह एलान कर रही है कि क्योंकि आपका वजूद मुसलमानों के दरमियान है क्योंकि आप मुसलमानों के दरमियान मौजूद हैं इस वजहसे हम उन पर अज़ाब नाज़िल नहीं करेंगे तो मुझे बताओ कि अब रसूल (स०) कहाँ मौजूद हैं। तो अब तो मैं मान लूँ कि अज़ाब नाज़िल हो सकता है। नहीं नहीं अज़ाब नाज़िल नहीं होगा इसलिए अगर पहला मुहम्मद (स०) मौजूद नहीं है तो आख़िरी मुहम्मद मौजूद है। तो अगर न मानो न तसलीम करो तो आयत का कोई फायदा नहीं अब नहीं क्योंकि आप उनके दरमियान में मौजूद हैं इसलिए अज़ाब नाज़िल नहीं करता। तो आज रसूल (स०) यहाँ मौजूद नहीं तो इसका मतलब यह कि कोई बिलकुल रसूल (स०) जैसा आज भी मौजूद है कि जिसकी बरकत से अज़ाब से हम महफ़ूज़ हैं।

आप देखें कि हर नबी से इक़रार लिया गया कि देखो हम तुम्हें हिकमत दे रहे हैं किताब दे रहे हैं लेकिन इस शर्त के साथ इस को आयते मीसाक़ कहा जाता है इस शर्त के साथ हम तुमको नुबूव्वत दे रहे हैं इस शर्त के साथ हम यह किताब व हिकमत दे रहे हैं शर्त यह है कि एक आने वाला नबी है जिस पर ईमान लाना होगा अगर उसकी रिसालत का इक़रार करो अगर उस पर ईमान लाओ तो फिर तुमको नुबूव्वत मिलेगी तुमको रिसालत मिलेगी हर नबी ने इक़रार किया कि हम इस आने वाले नबी पर ईमान लाते हैं। तो इसका मतलब है कि हर नबी का उन पर ईमान था। तो हम इस ईमान में सीरते अम्बिया पर अमल कर रहे हैं जिस तरह से उनको एक आने वाले पर ईमान था इसी तरह हमको भी एक आने वाले पर ईमान है। अगर वह एक आने वाले के मुनतज़िर थे तो हम भी एक आने वाले का इन्तिज़ार कर रहे हैं। और उस पर ईमान रखते हैं। फ़र्क़ बस इतना है कि वह अव्वल मुहम्मद (स०) के मुन्तज़िर थे हम आख़री मुहम्मद (अ०) के मुन्तज़िर हैं।

(इस्लाम– दीने हक़: मजमूआऐ मजालिस)

